विषय	हिंदी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	**P6: हिंदी प्रदेशों का लोक साहित्य**
इकाई सं. एवं शीर्षक	**M4: लोक-साहित्य और अंतरानुशासनिक ज्ञान शाखाएँ**
इकाई टैग	**HND_P6_M4**

निर्माता समूह	
प्रमुख अन्वेषक	**प्रो. गिरीश्वर मिश्र** कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : misragirishwar@gmail.com
प्रश्नपत्र समन्वयक	**प्रो. देवराज** अधिष्ठाता, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : dr4devraj@gmail.com
इकाई लेखक	**डॉ. छोटाराम कुम्हार** प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) हिन्दी विभाग जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ईमेल : crkumhar@gmail.com
इकाई समीक्षक	**प्रो. गिरीश्वर मिश्र** कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : misragirishwar@gmail.com
भाषा संपादक एवं प्रस्तुतकर्ता	**प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : pvctomgahv@gmail.com

पाठ का प्रारूप

1. पाठ का उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. लोक साहित्य की प्रकृति का सामान्य परिचय
4. लोक साहित्य का व्याप्ति क्षेत्र
5. लोक साहित्य और अंतरानुशासनिक ज्ञान शाखाएँ
6. निष्कर्ष

1. पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के उपरांत आप-

- लोक साहित्य के स्वरूप, अर्थ एवं उसकी प्रकृति को समझ सकेंगे।
- लोक साहित्य का क्षेत्र विस्तार जान सकेंगे।
- लोक साहित्य के अध्ययन के अंतरानुशासनिक परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे।
- अध्ययन हेतु सामग्री-स्रोत के रूप में लोक साहित्य की भूमिका से परिचित हो सकेंगे।
- वर्तमान में लोक साहित्य की उपयोगिता समझ सकेंगे।

2. प्रस्तावना

लोक साहित्य लोकवार्ता का अभिन्न अंग है। लोक के जो भाव, जैसे- हर्ष, विषाद, भय, प्रेम, करुणा, शोक, पौरूष आदि होते हैं, उनकी सामूहिक अभिव्यक्ति लोक साहित्य के विभिन्न रूपों, यथा- लोकगीतों, लोककथाओं, लोकगाथाओं, लोकनाट्यों, कहावतों तथा पहेलियों आदि में होती है, जिनकी परंपरा मौखिक ही होती है। लोक साहित्य शिष्ट साहित्य की तरह वैयक्तिक चेतना और नियमों में आबद्ध नहीं होता। उसका प्रवाह तो नदी की धारा की तरह स्वच्छन्द एवं निर्द्वन्द्व होता है, जो मानव इतिहास में अजस्र रूप में प्रवाहित होता रहता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक साहित्य की विशेषता स्पष्ट करते हुए ठीक ही लिखा है कि "ऐसा मान लिया जा सकता है, जो चीजें लोकचित्त से सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आंदोलित, चालित और प्रभावित करती हैं, वे ही लोक साहित्य, लोक-शिल्प, लोकनाट्य, लोक कथानक आदि नामों से पुकारी जा सकती हैं।" (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी: विचार और वितर्क, पृ. 206)।

लोकवार्ता का महत्वपूर्ण अंग होते हुए भी लोक साहित्य अपने आप में स्वतंत्र विषय है, जो लिखित साहित्य को भी ऊर्जा देता रहता है। यद्यपि लोक साहित्य मौखिक परंपरा का विषय ही माना जाता रहा है, लेकिन वर्तमान समय में उसके संरक्षण के परिणामस्वरूप उसका लिखित रूप भी उपस्थित हो गया है। लोक साहित्य की यह लिखित थाती आने वाले युगों को प्रेरित करती रहेगी।

3. लोक साहित्य की प्रकृति का सामान्य परिचय

लोक साहित्य लोक की बहुआयामी प्रतिभा का संचित कोष कहा जा सकता है। लोक अभिव्यक्तियों का वाणी रूप लोक साहित्य में देखा जा सकता है। ये अभिव्यक्तियाँ लोक के अनुभवों का निचोड़ होती हैं। लोकगीत, लोक साहित्य के मणिरत्न कहे जा सकते हैं। लोक के उत्सवों, मेलों, पर्वों, संस्कार, श्रम एवं बाल-मनोविज्ञान से संबंधित लोकगीत लोक जीवन के हृदय स्थल की यात्रा कराते हैं। इसी प्रकार लोककथाएँ लोक की शिक्षा का सशक्त माध्यम होती हैं। धर्म, इतिहास परंपरा के साथ नैतिक एवं आदर्श जीवन मूल्यों की प्रदर्शक, महान् चरित नायकों और लोक रक्षक देवी-देवता और योद्धाओं से संबंधित लोक कथाएँ लोक का मार्ग प्रशस्त करती रहती हैं। लोक कथाओं की भाँति लोकनाट्य भी लोकाभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम होते हैं। अपनी स्वच्छंद कथावस्तु, मुक्ताकाशी मंचसज्जा के साथ गायन और अभिनय द्वारा लोकनाट्य लोक का मनोरंजन तो करते ही हैं, समाज के इतिहास, संस्कृति और धार्मिक-नैतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति करके लोक का मार्गदर्शन भी करते हैं। लोक साहित्य में धर्मगाथाओं और पहेलियों की महत्ता भी कम नहीं है। धर्मगाथाएँ लोक को सदाचार एवं नैतिकता की शिक्षा देकर सन्मार्ग पर चलते रहने के लिए प्रेरित करती रहती हैं। पहेलियों में लोक के जीवन व्यवहार और सद् तथा असद् की व्याख्या जिस ढंग से की जाती

है, उससे हमारा शिष्ट साहित्य भी प्रेरणा ले सकता है। इस तरह लोक साहित्य लोकाभिव्यक्ति और लोक-शिक्षा का एक सशक्त माध्यम है।

4. लोक साहित्य का व्याप्ति क्षेत्र

डॉ. श्याम परमार ने लोक साहित्य के विषय क्षेत्र के विस्तार पर विचार करते हुए लिखा है कि "आधुनिक साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों में 'लोक' का प्रयोग गीत, वार्ता, कथा, संगीत, साहित्य आदि से युक्त होकर साधारण जन समाज, जिसमें पूर्व संचित परंपराएँ, भावनाएँ, विश्वास और आदर्श सुरक्षित हैं तथा जिसमें भाषा और साहित्यगत सामग्री ही नहीं, अपितु अनेक विषयों के अनगढ़ किंतु ठोस रत्न छिपे हैं, के अर्थ में होता है।" (डॉ. श्याम परमार: भारतीय लोक साहित्य, पृ. 9.10)। इस प्रकार एकदम आदिम लोक समाज से लेकर नागर समाज और उसके साहित्य को प्रभावित करने वाली समस्त अभिव्यक्तियाँ लोक साहित्य का विषय हो सकती हैं।

भारतीय लोक साहित्य की वैविध्यपूर्ण अभिव्यक्ति परिसीमा का परिचय देते हुए डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने लिखा है कि "हमारे इतिहास में जो भी सुन्दर और तेजस्वी तत्व हैं वे लोक में कहीं न कहीं सुरक्षित हैं। हमारी कृषि, अर्थशास्त्र, ज्ञान, साहित्य, कला के नाना स्वरूप, भाषाओं और शब्दों के भंडार, जीवन के आनंदमय पर्वोत्सव, मृत्यु, संगीत, कला, वार्ताएँ सभी कुछ भारतीय लोक से ओतप्रोत हैं। लोक की गंगा युगों-युगों से बह रही है। लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है, उसमें भूत, भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक ही राष्ट्र का अमर स्वरूप है, लोक कृत ज्ञान और संपूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है। अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्च प्रजापति है। लोक की धात्री सर्वभूत माता पृथिवी और लोक का व्यक्त रूप मानव, यही हमारे नये जीवन का अध्यात्म शास्त्र है।" ('सम्मेलन' पत्रिका, (लोक संस्कृति विशेषांक, 2010), वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 65)

इस तरह जीवन के विविधतापूर्ण कार्य-व्यापार और उसको प्रभावित करने वाले तत्वों की छवि हमें देखनी है, तो लोक साहित्य में देख सकते हैं। लोक साहित्य के विषय क्षेत्र में लोक का संपूर्ण जीवन, उसकी लोक संस्कृति तथा लोक परंपराओं के साथ ही उसका आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक-पौराणिक, नैतिक तथा भाषाशास्त्रीय रूप समाविष्ट रहता है, अतः लोक की तरह ही लोक साहित्य का क्षेत्र विस्तार भी बहुत व्यापक है और ज्ञान की अन्य अंतरानुशासनिक शाखाओं से उसका गहरा संबंध है।

5. लोक साहित्य और अंतरानुशासनिक ज्ञान शाखाएँ

लोक साहित्य व्यक्तिनिष्ठ ज्ञान की बजाय, समाजनिष्ठ ज्ञान को अनुभव की कसौटी पर कसकर प्रसारित करता है, अतः उसमें निहित संदेश और निष्कर्ष भी अधिक विश्वसनीय एवं सर्वजन हिताय होते हैं। यही कारण है कि समाजविज्ञान के सभी विषयों के साथ लोक साहित्य का न केवल घनिष्ठ संबंध है, बल्कि विज्ञान यथा चिकित्सा एवं भेषज जैसी ज्ञान की वैज्ञानिक शाखाओं के साथ भी उसका गहरा संबंध है। लोक साहित्य मानवीय ज्ञान की प्रत्येक शाखा के लिए उपयोगी स्रोत-सामग्री का कोश कहा जा सकता है। मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र, धर्म और समाजशास्त्र से जुड़ी अनेक बातें लोक-साहित्य की परंपरा में मिल जाती हैं। इतिहास के तथ्यों की तो लोक साहित्य खान ही होता है। लोकगीत, कथागीत, लोक गाथाएँ तथा लोक कथाओं में अनेक ऐतिहासिक घटनाओं का यथार्थपरक जीवंत चित्राकंन मिलता है। भाषा में शब्दों के विकास एवं व्युत्पत्ति की खोज-परख लोक भाषा के सहारे की जा सकती है।

5.1 लोक साहित्य और इतिहास

इतिहास अतीत के ज्ञान का कोश है, तो उस अतीत के विकास और उसके विभिन्न चरणों में घटित घटनाओं की प्रस्तुति लोक कथाओं, गीतों और नाटकों में देखी जा सकती है। मौखिक परंपरा में इतिहास के अनेक गूढ़ तथ्यों की प्रस्तुति लोक साहित्य में सुरक्षित रहती है, जिनके सहारे इतिहास के अनेक अनसुलझे बिन्दुओं को सुलझाया जा सकता है। लोक साहित्य में इतिहास के अनेक तथ्य मिल जाते हैं। लोकोक्तियों में तो इतिहास की अनेक घटनाओं की प्रत्यक्ष प्रस्तुति होती हैं। लोकगाथाओं में ऐतिहासिक पुरुषों के जीवन-चरित्र, नगरों, गाँवों और तत्कालीन समाज के सांस्कृतिक-सामाजिक परिवेश की जीवंत प्रस्तुतियाँ होती हैं। जीवन संघर्ष से जुड़े घटनाक्रम लोकमानस की मौखिक परंपरा में सुरक्षित रहते हैं। जनश्रुतियों और राजस्थान में परंपरा से चली आ रही किंवदन्तियों का उपयोग करते हुए कर्नल टॉड जैसे इतिहासकार एवं पुरातत्वविद् ने 'एनल्स एण्ड एंटिक्विटीज ऑफ राजस्थान' जैसा सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों का प्रदर्शक ग्रंथ रचा। इस तरह लोक साहित्य का अध्ययन जितना पुरातत्वविदों के लिए उपयोगी होता है, उतना ही इतिहास के विद्वानों के लिए भी होता है। शंकरलाल यादव ने इतिहास की दृष्टि से लोक साहित्य का महत्व उद्घाटित करते हुए ठीक ही लिखा है कि "विश्व और मानव की रहस्यमय पहेली को सुलझाने के लिए, उसके प्राचीनतम रूपों की खोज के लिए और उसके यथार्थ स्वरूप को जानने के लिए, जहाँ इतिहास के पृष्ठ मूक हैं, शिलालेख और ताम्रपत्र मलीन हो गए हैं, वहाँ उस तमसाच्छन्न स्थिति में लोक साहित्य ही दिशा निर्देश करता हैं।" (डॉ. शंकरलाल यादव, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, पृ. 43)।

इतिहास की एक महत्वपूर्ण शाखा पुरातत्व से भी लोक साहित्य का घनिष्ठ संबंध है। लोक साहित्य के आरंभिक अध्येता पुरातात्विक दृष्टि से ही लोकवार्ता का अध्ययन एवं शोध करने हेतु इस ओर प्रवृत्त हुए थे। पुरातत्वविद् लोक साहित्य के विभिन्न तत्वों की छानबीन करके ही उसमें से इतिहास के तथ्य ढूंढ कर अनेक अनसुलझे पक्षों पर प्रकाश डालते हैं। लोक साहित्य में पुराजगत् से जुड़ी तथा परंपरा से चली आ रही अनेक किंवदंतियाँ एवं लोककथाएँ समाहित रहती हैं। उनमें अतीत की घटनाओं तथा तथ्यों की लोक व्याप्त बातें होती हैं। पुरातत्वविद् उनकी छानबीन करके, खुदाई आदि के माध्यम से इतिहास के अनेक अनजाने और अनसुलझे पन्नों को स्पष्ट कर सकते हैं। इस तरह लोक साहित्य इतिहास के लिए स्रोत सामग्री का कार्य करता है।

5.2 लोक साहित्य और मानव विज्ञान (एंथ्रोपोलॉजी)

मानव विज्ञान अथवा नृविज्ञान का लोक साहित्य से गहरा संबंध है। लोक साहित्य के मूलाधार लोकवार्ता (Folk Lore) को तो आरंभ में एंथ्रोपोलॉजी (मानव विज्ञान) की ही एक शाखा माना जाता रहा है। फ्रेजर एवं टेलर आदि पुरातत्वविदों ने साहित्य के संदर्भ में लोकवार्ता की खोज के लिए 'एंथ्रोपोलोजिकल संप्रदाय' ही खड़ा कर दिया था। नृतात्त्विक विद्वानों में एडवर्ड टेलर, एण्ड्रू लैंग और जेम्स फ्रेजर आदि ने लोक साहित्य को संस्कृति की कसौटी पर कसते हुए धर्म एवं धर्म गाथाओं की लौकिक उत्पत्ति पर नृतात्विक दृष्टिकोण से ही विचार किया था।

नृविज्ञान की शाखा सांस्कृतिक नृविज्ञान का सीधा संबंध लोकवार्ता एवं लोक साहित्य से है। नृविज्ञान में आदिकालीन मानवों के विकास एवं उनके जीवन के सांस्कृतिक पहलुओं, यथा धार्मिक विश्वासों, धर्मगाथाओं, वंश-परंपरा, प्राकृतिक शक्तियों के उनके मानस पर पड़े प्रभावों, उनकी लोक कलाओं में धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकों का महत्व, देवी-देवता तथा भूत प्रेतात्मादि अलौकिक शक्तियों में विश्वास आदि का विवेचन-विश्लेषण होता है। लोक साहित्य में भी उपर्युक्त सभी बातें लोकतत्वों के रूप में अपना महत्व रखती हैं। इस संबंध में डॉ. सत्येन्द्र ने लिखा है कि "नृविज्ञान शरीर और रक्त की परंपरा का अध्ययन है तो लोकवार्ता उस शरीर की वाणी का। लोकवार्ता में लोक तत्वों के वर्गों

को समझने और उनके ऐतिहासिक कालांकन के लिए एंथ्रोपोलोजी का नृविज्ञान के बिना काम नहीं चल सकता।" (डॉ. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 74)। मानव विज्ञान की शाखा 'जाति विज्ञान' के अंतर्गत विभिन्न जातियों एवं उपजातियों के मानव समुदायों के विभिन्न चरणों में हुए विकास का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन इन जातियों के लोक साहित्य एवं लोकाभिव्यक्तियों के तुलनात्मक अध्ययन से भी किया जाता है। विभिन्न जातियों की संस्कृति उनके धार्मिक विश्वास, आचार-विचार तथा रीति-रिवाजों की झलक चूँकि उनके लोक साहित्य में मिलती है, अतः लोक साहित्य उनके जीवन को समझने का मुख्य विषय बनकर उभरता है। इस तरह नृ-विज्ञान की सांस्कृतिक शाखा का लोक साहित्य से अत्यधिक गहरा संबंध है।

5.3 लोक साहित्य और धर्मशास्त्र

धर्मशास्त्र धार्मिक आचार-विचार एवं ईश्वरीय चिंतन का शास्त्र है। धर्मशास्त्र में विभिन्न जातियों और संप्रदायों के धार्मिक विश्वास, पूजा-पद्धति, रीति-रिवाज, दैविक प्रतीकों, अनुष्ठान तथा आचार-विचारों पर चिंतन रहता है। भारतीय संस्कृति तो धर्म की आधारशिला पर ही विकसित हुई है। चूँकि लोक साहित्य के अंतर्गत धर्मगाथा और लोकगीतों में भी लोक संस्कृति, लोक विश्वास, लोक मान्यताएँ, पर्व-त्यौहार, देवी-देवता तथा धार्मिक विधि-विधान और मेलों आदि का जीवंत चित्रांकन मिलता है, इसलिए उसका धर्मशास्त्र से भी गहरा संबंध है। लोकवार्ता के प्रमुख तत्व भूततत्ववाद, जादू और पूर्वज-पूजा (ऐनीमिज्म, मैजिक तथा एन्सेस्टर वरशिप) जैसे आदिम विश्वास धर्म की भी मूल प्रवृत्तियाँ हैं। लोकगीतों एवं धर्म कथाओं में भी इनका चित्रांकन मिलता है, इसलिए धर्मशास्त्र के अध्येताओं के लिए लोक साहित्य में अनेक दुर्लभ एवं उपयोगी तथ्य मिल जाते हैं। धर्म शास्त्र के मूल में लोक विश्वास होता है और लोक साहित्य में भी लोक विश्वास निहित होते हैं। जो पुराण कथाएँ, धार्मिक आचार-विचार और संस्कार की शिक्षा देती हैं, उनका मूल लोक-परंपरा एवं लोक विश्वासों पर टिका हुआ होता है। विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा आराधना का तो लोक विश्वास एवं धर्म से सीधा संबंध होता है। लोक साहित्य भी लोक की संस्कृति का प्रदर्शक रूप होता है, अतः उसमें लोक विश्वास एवं धर्म से जुड़ी हुई अनेक बातों का वर्णन मिलता है। इसी कारण लोक साहित्य में धर्मशास्त्र के अध्येताओं को अनेक दुर्लभ तथ्य मिल जाते हैं। यह बात पौराणिक धर्मगाथाओं पर लागू होती है, जिनमें लोक की अनेक मान्यताएँ- आस्था, विश्वास आदि का जो चित्रण मिलता है, वह लोक साहित्य की भी थाती होता है।

पौराणिक धर्म गाथाएँ अपने परंपरागत वैशिष्ट्य के साथ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं अतः उनमें उल्लिखित बातें धार्मिक दृष्टिकोण से लोक का पथ-प्रदर्शन करती रहती हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि धर्मशास्त्र के लिए लोक साहित्य और लोक साहित्य के लिए धर्मशास्त्र का अध्ययन परस्पर आवश्यक और उपयोगी होता है।

5.4 लोक-साहित्य और मनोविज्ञान

मनोविज्ञान मानव के मन का विश्लेषणपरक अध्ययन करता है। 'लोकवार्ता' साहित्य की व्याख्या के लिए जर्मन विद्वान् विलहल्म वुंट ने तो 'मनोवैज्ञानिक संप्रदाय' ही स्थापित कर दिया था और राष्ट्रों के मनोविज्ञान (National Psychology) में लोकवार्ता के मनोवैज्ञानिक स्रोत पर बल दिया था।" (देखिए डॉ. सत्येन्द्र: लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 73)।

लोक साहित्य लोकमानस की रचनात्मक प्रस्तुति होता है अतः उसमें लोक के मनोविज्ञान की सच्ची तस्वीर देखी जा सकती है। फ्रायड ने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में काम प्रवृत्ति से लोकवार्ता के मूल की व्याख्या की थी। युंग ने जिस सामूहिक मानस (Collective mind) की चर्चा की थी, वह लोकमानस ही है। जातीय मनोविज्ञान, लोक मनोविज्ञान और आदिम मनोविज्ञान की तो अधिकतर सामग्री लोक साहित्य से ही संचित की जाती है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक चिंतन के पुरस्कर्ता फ्रायड और युंग ने लोकवार्ता के रूप- लोक साहित्य आदि की उत्पत्ति के कारणों पर मनोवैज्ञानिक पद्धति से गहन अध्ययन किया था। लोक साहित्य में जिस लोकमानस की प्रस्तुति होती है, उसके विश्लेषण का आधार मनोविज्ञान ही हो सकता है।

हमारा अचेतन मानस अनेक आदिम प्रवृत्तियों, लोक विश्वासों और धारणाओं से भरा रहता है। लोक साहित्य में इस अचेतन मानस की अनेक बातें लोकतत्वों के रूप में अभिव्यक्त होती रहती हैं, जिनकी व्याख्या मनोविश्लेषण के सहारे ही की जा सकती है। लोक साहित्य में लोक के विश्वासों की अभिव्यक्ति होती है और इन विश्वासों की व्याख्या मनोविज्ञान का विषय है। विश्वास कितने प्रकार से मूर्त होते हैं, उन मानसिक मूर्त रूपों का क्या मनोवैज्ञानिक पहलू है, यह मनोविज्ञान संबंधी शोध का विषय है। 'लोकवार्ता' में भी मनोविज्ञान की सहायता से लोकमानस और उसके ऐतिहासिक स्तरों को समझने का प्रयास किया जाता है अतः कहा जा सकता है लोक साहित्य और मनोविज्ञान का संबंध भी अत्यधिक गहरा है।

5.5 लोक साहित्य और दर्शनशास्त्र

लोक साहित्य लोक का शास्त्र है तो दर्शनशास्त्र मनुष्य जीवन की गूढ़ पहेलियों को सुलझाने का शास्त्र है। प्रकृति, परिवेश और इस ब्रह्माण्ड के अनेक अनसुलझे प्रश्नों से जूझने का काम दार्शनिक करते आए हैं। लोक साहित्य दर्शनशास्त्र की इन्हीं पहेलियों को अपनी सहज शैली और लोक चिंतन से समझाने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार दर्शन के ऐतिहासिक स्वरूप और मूल को समझने के लिए लोक साहित्य खाद का काम करता है। दूसरी ओर दर्शनशास्त्र की परिधि लोक से लेकर अध्यात्म तक फैली हुई है। धर्म के विधि-विधान और क्रम विकास से जुड़ी लोक में प्रचलित अनेक मान्यताएँ भी दर्शन शास्त्र के लिए उपयोगी सामग्री हो सकती हैं। इसी तरह लोक साहित्य के मिथकों और धर्म कथाओं में दर्शनशास्त्र से जुड़ी हुई अनेक बातें सहज रूप में अभिव्यक्ति पाते देखी जा सकती हैं। आत्मा-परमात्मा, जड़-चेतन, साकार-निराकार, धर्म की अलामतें, यज्ञ, बलि, धर्म के आस्था स्थलों से जुड़ी अनेक कथाएँ, लोक साहित्य में बिखरी पड़ी हैं, और दर्शनशास्त्र का विषय भी इन विषयों की छानबीन करना है। लोक साहित्य और दर्शनशास्त्र के संबंध पर विचार करते हुए डॉ. सत्येन्द्र ने लिखा है- "दर्शन के सिद्धान्तों के मूल में लोक-बीज मिलेगा। चाहे वह ईश्वर की अद्वैत सत्ता हो, पुनर्जन्म अथवा आवागमन का सिद्धान्त हो, अथवा परलोक का, आत्मा का अथवा परमात्मा का, साकार का अथवा निराकार का, मूर्तिकला का, यज्ञ का, बलि का, धर्म के समस्त संस्थान का मूल आदिम स्थिति के विश्वासों में दिखाई पड़ेगा, जो आज भी हमें लोक साहित्य में और लोक वार्ता में किसी न किसी रूप में अवशिष्ट दिखाई पड़ते है।" (लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 72)। धर्म में जिस आस्था एवं विश्वास की चर्चा की जाती है वे दोनों ही लोक साहित्य के प्रमुख तत्वों में सम्मिलित हैं। इस तरह से लोक साहित्य और दर्शनशास्त्र, दोनों एक दूसरे से संबद्ध हैं।

5.6 लोक साहित्य और समाजशास्त्र

समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र का विषय समाज में रहने वाले विभिन्न जन समुदायों और जातियों की सामाजिक प्रथाओं, रीति-रिवाजों, विश्वासों, सामाजिक संगठनों, व्यवहारों और व्यवस्थाओं का विवेचन विश्लेषण करना है।

समाज के विभिन्न पहलू- यथा पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन के साथ ही रहन-सहन की पद्धतियाँ, सामाजिक संबंधों का स्वरूप आदि का अध्ययन भी समाजशास्त्र में किया जाता है। लोक साहित्य भी समाज के अंतर-बाह्य पक्षों एवं जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति करता है, इसलिए लोक साहित्य की सामग्री भी समाजशास्त्र के लिए स्रोत सामग्री का काम करती है और समाजशास्त्री अपने अनुसंधानों में इसका उपयोग भी करते रहते हैं।

लोक साहित्य में सामाजिक प्रथाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों की जीवंत प्रस्तुतियाँ होती हैं। लोक साहित्य की यह संपूर्ण सामग्री समाजशास्त्र के लिए भी उपयोगी होती है। व्रत, त्योहार, अनुष्ठान, संस्कार आदि प्रथाओं का तो लोक साहित्य भंडार होता है और एक समाजशास्त्री भी समाज की इन प्रथाओं के प्रकाश में किसी समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं का उद्घाटन करता है। समाज विज्ञान में लोक समाज की जिन विशेषताओं का उद्घाटन समाजशास्त्री करते हैं, वे सारी विशेषताएँ किसी न किसी रूप में लोक साहित्य में भी अभिव्यक्त होती रहती हैं। लोकसमाज में जातीय आचार-विचारों की समरूपता, वैयक्तिक एवं सामाजिक संबंधों में निकटता, सरल तकनीकी विधान, श्रम की सामूहिकता, सामाजिक संगठनों में परिवार की महत्ता, आचरण की शुद्धता, निश्छल एवं सहज जीवन शैली, एक तरह के रीति-रिवाज एवं अनुष्ठान आदि ऐसे तत्व हैं, जिनसे लोक साहित्य का खजाना भरा हुआ होता है। यह खजाना समाज विज्ञान की भी विषयवस्तु होता है। इस तरह इन दोनों में बहुत गहरा संबंध है।

5.7 लोक साहित्य और अधुनातन ज्ञान शाखाएँ

आज का युग विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। विज्ञान आज के जीवन की शक्ति एवं सीमा दोनों है। विज्ञान का नया चामत्कारिक आविष्कार सूचना प्रौद्योगिकी है। इस सूचना प्रौद्योगिकता ने सारे विश्व को एक ग्लोबल गाँव में बदल दिया है। विज्ञान तर्क और परीक्षण पर आगे बढ़ता है, जबकि लोक आस्था एवं विश्वास पर चलता है। यही कारण है कि सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में समाज के कई पारंपरिक मूल्य या तो टूट गए हैं या अप्रासंगिक करार कर दिये गए हैं। आज का मानव परंपरागत रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों से मुक्त होकर हर चीज को तर्क की कसौटी पर कसकर ही आगे बढ़ना चाहता है।

यद्यपि लोक साहित्य परंपरागत जीवन-मूल्यों का वाहक होता है, लेकिन नए मूल्यों के प्रति उसमें नकार का भाव भी नहीं होता। लोक मानस युगानुरूप परिवर्तनों को समझते हुए उसके अनुरूप अपने को ढालता भी रहता है, लेकिन उसके परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी होती है। लोक साहित्य चूंकि सर्जक लोकमानस की अभिव्यक्ति होता है, इसलिए उसमें नवीनता को अपनाते हुए नए-नए विषयों पर अपनी अभिव्यक्तियाँ करने की क्षमता भी होती है। आज परंपरागत लोक गीतों के स्थान पर लोक मानस ने नए-नए गीत रच लिए हैं, जिनमें नई तकनीक की बातें एवं सूचनातंत्र से प्राप्त बातों का समावेश मिल जाता है। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत भी लोकसाहित्य का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। लोगों द्वारा गढ़े गए मुहावरे, लोकोक्तियाँ, लोक गीत एवं लोक कथाओं का उपयोग फिल्म, दूरर्शन एवं इंटरनेट जैसे सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यमों में खूब किया जाता है। इस तरह लोक में वह शक्ति है कि वह युगानुरूप बदलता भी है और आज का लोक साहित्य सूचना प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान से भी प्रभाव ग्रहण कर रहा है। आज की लोक संस्कृति का संवर्धन एवं संरक्षण तकनीकी संसाधनों से हो रहा है, यह लोकसाहित्य के क्षेत्र में स्थायी महत्व की उपलब्धि मानी जा सकती है।

6. निष्कर्ष

- लोक साहित्य लोक समाज का दर्पण होता है। उसमें लोक जीवन के विभिन्न पक्षों के साथ ही परंपरागत मूल्यों और समाज को जीवनीशक्ति देने वाले विचारों की अलिखित अभिव्यक्ति होती है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी समाज का मार्गदर्शन करती रहती है।
- लोक साहित्य किसी भी जाति और राष्ट्र की अमूल्य धरोहर होता है, क्योंकि उस जाति और राष्ट्र की संस्कृति और लोकमूल्यों का उसमें सच्चा चित्रण होता है।
- लोकसाहित्य इतिहास, समाजशास्त्र, नृतत्वशास्त्र और मनोविज्ञान जैसे विषयों के लिए सामग्री-स्रोत का काम करता है अतः ज्ञान के प्रसार में भी उसकी महनीय भूमिका है।
- लोक साहित्य में चित्रित संस्कृति, सामाजिक मूल्य, रीति रिवाज, पर्व एवं त्योहार, मेलों के साथ ही भाषा एवं बोली की विशेषताएँ किसी भी राष्ट्र के लिए स्थायी महत्व की बातें मानी जा सकती हैं।
- लोक साहित्य समाज के आदर्श रूप एवं आध्यात्मिक चेतना को बनाए रखने में भी अपनी भूमिका निभाता है।
- लोक विश्वास एवं आस्था जैसे मूल्य समाज में लोक साहित्य द्वारा प्रसारित होते रहते हैं, जिससे समाज की जीवनी शक्ति बनी रहती हैं।
- लोक साहित्य का किसी भी समाज में अमूल्य महत्व होता है और वह ज्ञान की विविध शाखाओं को संवर्धित करने का एक सशक्त माध्यम भी होता है।

ePathshala पाठशाला A Gateway to All Post Graduate Courses